बिस्मिल्लाहिर्रहमाननिर्रहीम

सिरातल मुस्तकीम

AL SIRATUL MUSTAQIIM

अस्लामोवालैकम व रहमतल्लाह व बरकतह

१ जून २००१ की वह सियाह रात ऐसी खौफनाक रात थी जिसे सोचकर हमारे रौंगटे खडे हो जाते हैं । काठमाण्डू की शाही महल में रात १०:४० बजे अचानक गोली चलने आवाज से शहर में रहने वाले लोगों की नींद उड्गई । लोगों में अफरा तफरी मच गइ । जब सबेरा हुआ तो बी.बी.सी. के जरिये पता चला के नेपाल के बादशाह श्री ५ वीरेन्द्र, महारानी ऐश्वर्या और उसके तमाम खानदान पलभर में गोलियों से भून दिया गया । किसी के भी वहमो गुमान में भी यह न था कि तमाम शाही खानदान अपने ही खून के हाथों से मौत के घाट उतार दिया जायेगा । तमाम शान–ओ–शौकत और निहायत ही चौकन्नी पहरेदारी के बावजुद भी आखिरकार शाही खानदान दिल दहला देने वाली दर्दनाक मौत के शिकार हो गए । क्या मौत को कोई रोक सकता है ?

तमाम दुनियाँ में ऐसा होता है के लोगों को अचानक मौत का सामना करना पडता है । इसकी वजह उनमें से कोई भी हो सकती है । मस्लन तुफान, जलजले, जंग या अचानक पेश आने वाला कोई भी हादसा ये सब कुछ इतना अचानक और तबाहकुन होता है के लोग किसी भी तरह से उनकी तबाहकारी से बच नहीं सकते । कुछ लोगों की मौत की वजह कुछ ला–इलाज बीमारीयाँ होती हैं । हम सब अपने आपको मौत के लिए त}यार करते हैं । लेकिन मौत हमेशा बगैर किसी पेशीन्गोइ के आती है और उस पर किसी को इख्तियार नहीं ।

कुछ लोग ज्यादा अरसा जिन्दा रहने के लिये तरह तरह के जतन करते हैं । वह सीग्रेट पीना छोड देते हैं । ज्यादा से ज्यादा जिस्मानी वर्जीसें करते हैं, परहेजी खाने खाते हैं और ज्यादा ताकत वाले खाने खाते हैं । उसके बावजुद के हम मौत का कितना भी इन्कार करें एक दिन हमें मौतका शिकार होना है ।

कई लोग तो मौत के बारे में बिल्कुल भी नहीं सोचते । खास कर ऐसे वक्त जब उनकी जिन्दगी में किसी किस्म की कोई मुश्किल नहीं, उनके पास खाने और पीने को सब अच्छा है और कारोबारी लेहाज से भी उनका मुस्तकबील महफूज है और घर में भी किसी किस्म की परेशानियाँ नहीं हैं और उन्हें मआशरे में एक उँचा मकाम भी हासिल है । तो ऐसे में मौत उनके जहनों से कोसों दूर होती है । लेकिन मौत का असर सिर्फ बीमार या बूढे लोगों पर ही नहीं होता । सेहतमन्द और नौजवान लोग भी अचानक उसका शिकार हो सकते हैं । **लोगों का तअल्लुक चाहे कितने भी उँचे या नीचे तबके से हो, मौत सब के लिये बराबर है ।**

अल्लाह तआला को इस बात का पूरा इख्तियार है के वह हमें जन्नत बख्शे या दोजख की सजा का मुस्तहक ठेहराए, वही उसका इन्साफ करने वाला है । उसका नाम (अर्रहमाननिर्रहीम) बडा मेहरबान और निहायत रहम वाला है । सो वह हमें तम्बीह करता है के हम देखें और अपने आपको मौत और क्यामत की आमद के लिए तैयार रखें । तमाम इन्सानों को मरना लाजीम है और उसके बाद उन्हें क्यामत के दिन दुनियाँ मे गुजारी गई जिन्दगी का और अपने किये हुए तमाम आमाल का हिसाब देना होगा ।

इसीलिये अल्लाह तआला चाहता है के हम हर वक्त तैयार रहें बल्कि इस लम्हें भी । और ऐसा शख्स जो इसके लिये हर वक्त तैयार रहता है, वही है जो "सिरात–ए–मुस्तकीम" पर चलता है और उसी को वह सुकून, ईमान हासिल होता है, जो सिर्फ अल्लाह तआला ही दे सकता है ।

ये दुनियाँ दो दिन की है

इस जिन्दगी का मतलब क्या है ?

ये दुनियाँ दो दिन की है । ये जिन्दगी बल्कि दुनियाँ की तमाम खुशहाली बिल्कुल उन बोखारात की तरह है जो कुछ देर के लिये फिजा में मोअल्लक नजर आते हैं और फिर मादूम हो जाते हैं । हमारी जिन्दगी को इस दुनियाँ पर फौकियत है और ये उस दुनियाँ से ज्यादा देरपा है । क्योंकि यह हमें उस अल्लाह तआला की तरफ से दी गई है जिसकी जात लाफानी है ।

बहुत से लोग सिर्फ दुनियाँवी खुशियों के लिये जिन्दा रहते हैं । हम रोजाना अपने आपको दुनियाँवी कामों और दौलत की तलाश में मसरुफ रखते हैं या फिर कामों और दूसरी तरह की दिलचस्पियों में लगे रहते हैं जो के बहुत जल्द फिकी पड जाती हैं और तब हमें पता चलता है के ये रौनकें खत्म हो चुकी हैं और हम जिन्दगी का मकसद खो देते हैं । शैतान भी हमें इन

बनावटी खुशियों के लिये जद्दो–जेहद करने पर उकासाता है । वो चाहता है कि हम गुनाहों में घीर कर अपनी जिन्दगीयों को जाए कर दें और हमेशा के लिये जहन्नम को अपना ठिकाना बना लें ।

ये बात भी हकीकत है के जिन मुश्किलात व तकालिफ का सामना हम इस आरजी दुनियाँ में करते हैं वह इन खुशियों से बहुत ज्यादा हैं । हम इस बात को भूल जाते हैं कि आखिरकार हमें उसी खुदा की तरफ लौटना है जो के हमारी जानों का मालीक है, हम अल्लाह होकर जिन्दगी के माअनी खो देते हैं ।

लेकिन अल्लाह तआला हमेशा हमारी रहनुमाई करता है ताके हम देखें कि हकिकी खुशी क्या है । जब हम उसकी रहनुमाई के मुताबिक चलते हैं तो हमें इस दुनियाँ में अपनी जात को काबू करने की ताकत हासिल होती है । जब हम अल्लाह तआला के बताए हुए सिधे रास्ते यानी सीरात–ए–मुस्तकीम पर चलते हैं तो हमे पता चलता है के हमारी जिन्दगीयाँ गुनाहों से पाक कर दी गई हैं ताकी हम हमेशा के लिये जन्नत में रिहाइश इख्तियार करें, जहाँ गुनाह का कोई वजूद नहीं ।

रोज–ए–आखरत मे इन्सानी रुह के लिये दो मुकामात मुकर्रर हैं **जन्नत और जहन्नम** । एक दफा जब हमारी रुह को उनमें से किसी एक जगह में दाखिल करने का फैसला कर लिया जाता है तो न तो हम उस मकाम को तब्दील कर सकते हैं और नहीं उस से बाहर जा सकते हैं । हमें वहाँ हमेशा के लिये रहना है ।

हम में से कोई भी यह नहीं जानता कि हम कब मरेंगे । इसलिए फैसला करने का आज आखरी मौका है कि हम कहाँ जाऐं ।

आप अपने रहने के लिये उन में सें किस लाफानी जगह का इन्तखाब करेंगे ?

जन्नत

जन्नत एक इन्तेहाइ खुबसूरत आरामगाह है और हमेशा रहने के लिये सब से बेहतरीन जगह है । इसके चारौं तरफ इन्तेहाई हैरत अंगेज बागात हैं जहाँ हर तरफ बहुत पुरसुकुन किस्म की अवाजें होती हैं और जहाँ का माहौल बहूत काबिले एहतराम होता है । वह लोग जो अल्लाह तआला पर इमान लाते हैं वह हमेशा की नजात पा कर जन्नत में अपना मुस्तकिल ठिकाना

बनाते हैं और गुनाहों की गन्दगी से पाक कर दिये जाते हैं । वहाँ सिर्फ खुशियाँ हैं और हर वक्त अल्लाह तआला की हम्द–ओ–सना होती है । जिसने हमारी जिन्दगीयों से गमों और रोने–धोने को हमेशा के लिये खत्म कर दिया । हमारा इन्सानी जहन इसे पूरी तरह समझ नहीं सकता और नहीं पूरे तौर पर जन्नत की खूबसूरती की वजाहत कर सकता है । लेकिन हम जानते हैं के जो लोग दिलो–जान से अल्लाह तआला के अहकामात की ताबेदारी करते हैं और उसके बताए हुए रास्ते पर चलते हैं, जन्नत उन्हीं को दी जाएगी ।

हमारा इन्सानी दिमाग आसमानी खूबसूरती को न तो मुकम्मल तौर पर समझ सकता है और नहीं उस पर पूरी तवज्जह देसकता है ।

अब सवाल उठ्ता है कि हम जैसे गुनाहगार जन्नत का मजा कैसे ले सकता है ? सिर्फ वही लोग उस खूबसूरत जगह में दाखिल हो सकता है, जिसे अल्लाह तआला ने पाक ठहराया है । कुरआन के रौशनी में हम देखते हैं कि अल्लाह ने ईसा इब्न मरियम को दुनियाँ के तमाम गुनाहगारों के लिए मुकद्दस तौहफा ठहराया ।

"Sighn unto men and a mercy from us." Qs.19 Maryam 19,21

उन्होंने कहा कि मैं तो तुम्हारे परवरदिगारका भेजा हुआ (यानी फरिश्ता) हूँ (और इसलिए आया हूँ) कि तुम्हें पाकीजा लडका बख्शूँ ।(सूरः मरियम आयत १९)

(फरिश्ते ने) कहा कि यों ही (होगा) । तुम्हारे परवरदिगार ने फरमाया कि यह मुझे आसान है और (मैं उसे इसी तरीके पर करूँगा) पैदा ताकि उसको लोगों के लिए अपनी तरफ से निशानी और रहमत वा मेहरबानी का जरिया बनाऊँ और यह काम मुकर्रर हो चुका है ।((सूरः मरियम आयत २१)

लेकिन हम ये जानते है के जो लोग तन्देही से अल्लाह तआला की राहों और उसके अहकामात पर चलते हैं उनहीं को ये जगह दी जाएगी (सूरः मरियम आयत नं. १९)

आसमान और जमीन पर अल्लाह ने ईसा अलैहिस्लाम का नाम मुकर्रर किया बतौर वादा किया हुआ ईमाम मेहदी, दुनियाँ और आखिरत में मशहूर व बा–आबरु ।

3rd Sura Qs. 3Al Imran 45

(जिसका नाम मसीह (और मशहूर) ईसा इब्ने मरियम होगा (और जो) दुनियाँ और अखिरत में बा–आबरु और (खुदा के) खासों में से होगा(सूरः आले इम्रान आयत – ४५) ।

जहन्नम

जहन्नम एक इन्तेहाई बदतरीन और अजीयतनाक जगह है । जो लोग जहन्नम में डाले जाते हैं वह हर वक्त अजीयत में मुब्तला रहते हैं । क्योंकि उनका लिबास और ओडना, बिछौना सब कुछ आग का बना हुआ होता है । यहाँ पर रहने वालों के सरों के उपर और पाओं के नीचे आग ही आग बिछी होती है । यहाँ की हर जगह आग से ढकी हुई है और हर तरफ सियाह धुआँ और अंधेरा है । उस अफसोसनाक जगह पर आँखें अंधी, कान बहरें और मुँह गूंगे हो जाते हैं । अजीयतनाक तशद्दुद के बावजूद यहाँ पर बसने वाली रुहें मरती नहीं । यहाँ पर रहने वालों के लिये मोसल्सल कराहने के बावजूद रेहाई की कोई उम्मीद नहीं । वह जिन्दा हैं लेकिन बिल्कुल मुर्दों की तरह । यहाँ की तकालीफ कभी खत्म नहीं होंगी, क्योंकि ये हमेशा के लिये हैं ।

पहले इन्सान (हजरत आदम) की आमद से लेकर तमाम इन्सान शैतान की गुमराही का शिकार हुयें । वह गुनाहगार होकर जहन्नम जैसी अजीयतनाक जगह की सजा के मुजरीम ठहरे ।

Qs.19 Maryam 71

और तुम मे कोई (शख्स) नहीं मगर उसे उसपर गुजरना होगा यह तुम्हारे परवरदिगार पर लाजिम और मोकर्रर है (सूरे मरियम आयत ७१)

सिरातल मुस्तकीम

(जन्नत जाने का सिधा रास्ता)

हम सब जानते हैं के वह लोग जो अल्लाह तआला के कायम कर्दह दीन की एताअत करते हैं और उसके दिए हुये अहकामात की पैरवी करते है और जो सौ फिसद (१००) कामिल और फैयाज हैं वही जन्नत में जा सकते है ।

लेकिन हम में से कितने ऐसे हैं जो पूरी तरह से उन मजहबी अहकामात की पैरवी करते हैं और बगैर किसी गलती या भूल चूक के खैरात देते हैं ? हम में से कितनों के पास इस बात की ताकत या कुव्वत है के हम जन्नत में दाखिल होने से पहले मोहब्बत, तन्देही, फर्मा–बरदारी और खैरात का वो मेयार हाँसिल करें जिस्की हमें जरुरत है ? जन्नत में दाखील होने के लिये हमें कितने

तनदेही से लाजमी तौर पर मजहबी अहकामात की पैरवी करना हैं ? कितनी खैरात देना हमारे लिए काफी होगा ताके हम यकिनी तौर पर जान सकें के हम जन्नत मे जा सकते हैं ? क्या कोई ऐसा पैमाना है जो हमें इस काबिल कर सके के हम यकिनी तौर पर जान सकें के हम जन्नत में दाखिल हो सकते है ? कोई भी नहीं ।

नतिजा बहुत से लोग परेशानी, शकूक–शुबहात और बेयकिनी की कैफियत का शिकार हैं । हालाँ के वो पूरी तन्देही से इबादत करते है और खैरात देते हैं क्योंकि वह सौ फिसद (१००%) कामिल नहीं हैं । वह अपने मुस्तकबील के बारे में गैर यकिनी का शिकार है क्योंकि वह इस बात का अन्दाजा नहीं लगा सकते की जो कुछ उन्हों ने किया है वह जन्नत जाने के लिये काफी हैं ।

सदियों से अल्लाह तआला हमें दिखाता आ रहा है के हम हमेशा उस से दुआ करें के वह हमें वह रास्ता देखाए जो उस ने खुद हमारे लिए तैयार किया है, तबही हम उसमे दाखिल हो सकते हैं ।

Qs.1 Al-Fatihah 6

इहिदनस्–सिरातल्मुस्तकीम

हमको सीधे रास्ते पर चला

(सूरः फातिहा आयत ६)

Qs.5 Al Maaidah 35

(ऐ ईमान वालो खुदा से डरते रहो और उस का कुर्ब हासिल करने का जरिया तलाश करते रहो...)

(सूरः अल–माइदाः आयत ३५)

क्या आप इस रास्ते से वाकिफ हैं ?

बडा महैरबान और रहम वाला

(अर्रहमान नीर्ररहीम)

(सूरः फातिह आयत ३)

क्योंकि अल्लाह बडा मेहरबान और निहायत रहम वाला हैं, वह हमें याद दिलाता है और कुरआन पाक में दी गई अपनी रहनुमाई की तौसीक करता है । जिस में उसने बताया है की हम किस तरह जन्नत में दाखिल हो सकते हैं । आईये ये जानने के लिये नीचे दिये गए कुरआन पाक और अहादीस शरीफ के हवालों का मुताला करें ।

(१) और वह (ईसा) क्यामत की निशानी हैं । तो (कहदो के लोगो !) इस में शक न करो और मेरे पीछे चलो । यही सीधा रास्ता हैं । (सूरे अज्जखुरुफ आयत ६१)

Qs. 43 Az Zukhruf 61

(२) और जब ईसा निशान्यिँा ले कर आए, तो कहने लगे कि में तुम्हारे पास दानाई (की किताब) लेकर आया हूँ । इसलिये कि कुछ बातें जिन में तुम एखतलाफ करते हो, तुमको समझा दूँ, तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो । (सूरे अज्जखुरुफ आयत ६३)

Qs. 43 Az Zukhruf 63

(३) ये मरियम के बेटे ईसा हैं (और ये) सच्ची बात है जिस में लोग शक करते हैं। (सूरे मरियम आयत ३४)

Qs.19 Maryam 34

(४) मसीह इब्न मरियम खुदा के रसूल और उसका कलमा (बशारत) ये (सूरे अन्नीसा आयत १७१)

Qs. 4 An Nisa 171

(५) ईसा रुहुल्लाह व कलेमतुल्लाह हैं (हदीस अनस बिन मालीक सफा ७२)

(६) (उस वक्त) हमने उनकी तरफ अपना फरिश्ता भेजा तो वह उनके सामने ठीक आदमी (की शकल) बन गया (सूरे मरियम आयत १७)

(७) हजरत ईसा ही इमाम मेहदी हैं (हदीस इब्न माजा)

(८) और उन (मरियम) को (भी याद करो) जिन्हों ने अपनी इफत को महफूज रखा । तो हमने उन में अपनी रुह फूंक दी और उनके बेटे को अहले–आलम के लिए निशानी बना दिया (सूरे अल–अम्बीया आयत ९१)

Qs.21 Al Aanbiyaa 91

(९) जिस दिन में पैदा हुआ और जिस दिन मरुँगा और जिस दिन जिन्दा करके उठाया जाउँगा मुझ पर सलाम (व रहमत) है। (सूरे मरियम आयत ३३)

Qs. 19 Maryam 33

(१०) उस वक्त खुदा ने फरमाया कि ईसा ! मैं तुम्हारी दुनियाँ में रहने की मुद्दत पूरी कर के तुमको अपनी तरफ उठा लूँगा और तुम्हें काफिरों (की सोहबत) से पाक कर दूँगा

और जो लोग तुम्हारी पैरवी करेंगे उनको काफिरों पर क्यामत तक फाइक (व गालिब) रखूँगा (सूरे आले इम्रान आयत ५५)

Qs.3 Aali Imraan 55

(११) और अंधे और अबरस को तन्दुरुस्त कर देता हूँ और खुदा के हुक्म से मुर्दे में जान डाल देता हूँ (सूरे आले इम्रान आयत ४९)

Qs.3 Ali Imraan 49

(१२) और मुर्दे को (जिन्दा कर के कब्र से) निकाल खडा करते थे (सूरे अल–माइदः आयत ११०)

Qs.5 Al Maa-idah 110

(१३) और ईसा इब्ने मरियम को हम ने खुली हुयी निशानियाँ अता की और रुहलकुदूस से उनको मदद दी (सूरे अल बकरः आयत २५३)

Qs.2 Al Baarah 253

(१४) और उनके कुफ्र की सबब और मरियम पर एक बोहताने अजीम बाँन्धने के सबब (सूरे अन–निसा आयत १५६)

Qs.4 An Nisaa 156

(१५) और कोई अहले किताब नहीं होगा मगर उनकी मौत से पहले उन पर ईमान ले आएगा और क्यामत के दिन उन पर गवाह होंगे (सूरे अन–निसा आयत १५९)

Qs.5 An Nisaa 159

(१६) अहो के ऐ अहले किताब जब तक तुम तौरेत और इंजील को और जो (और किताबे) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम लोगों पर नाजील हुयीं उनको कायम न रखोगे कुछ भी राह पर नहीं हो सकते (सूरे अल–माइदः ६८)

Qs.5 Amaa-idah 68

(१७) और यह बडी किताब (यानी लोहेमहफूज) में हमारे पास (लिखी हुयी और) बडी फजीलत (और) हिक्मत वालो है । (सूरे अल–जुखरुफ आयत ४)

Qs.43 Az Zukhruuf 4

(१८) अह वक्त भी याद करने के लायक है) जब फरिश्तों ने (मरियम से कहा) के मरियम खुदा तुम को अपनी तरफ से एक फैज की बशारत देता है जिसका नाम मसीह (और मशहूर)

ईसा इब्ने मरियम होगा (और जो) दुनियाँ और आखिरत मे बा–आबरु और (खुदा के) खासों में से होगा (सुरे आले इम्रान आयत ४५)

Qs.3 Aali Imran 45

ईसा अल मसीह को इस दुनियाँ और आइन्दा दुनियाँ पर पूरा इख्तियार है । वही (अल मसीह) सेराते–ए–मुस्तकीम हैं । हमे कुर्आन पाक मे भी ये याद देहानी कराई गई है के ईसा अल–मसीह के मानने वालों को बे–दिनों से आला मकाम हासिल है । ईसा अल मसीह को मानने और उन की पैरवी करने से हम यकिनी तौर पर जन्नत मे जाऐंगे । ईसा अल–मसीह की जात इतनी अहम थी के कुरआन पाक में उनके नाम का जिक्र ९७ दफा किया गया है । (अल कुरआन)

अगर सदर–ए–मम्लेकत आप को ऐवाने सदर मे आने की दावत दे तो आप यकिन कर सकते है के आप उसमे दाखिल हो सकते है, क्योंकि वही सब से ज्यादा कुव्वत के हामील हैं और उन्हें ऐवाने सदर पर पूरा इख्तियार हासील है ।

ताहम अगर कोई वजीरे मम्लेकत जिसको ऐवाने सदर के हर हिस्से पर पूरा एख्तियार नहीं आपको वहाँ आने की दावत दे तो आप यकिनी तौर पर हिचकिचाऐंगे । यह भी हो सकता है के बहुत लम्बा सफर करने और बहुत सारे रुपैंये और तवानाई खर्च करने के बावजूद भी आपको ऐवाने सदर मे दाखिल होने की इजाजत न मिले ।

मगर ईसा अल–मसीह के मामले मे यह है के अल्लाह तआला ने जमीन व आसमान का कुल इख्तियार उनके सुपुर्द किया जैसे के अल्लाह तआला ने सदर–ए–मम्लेकत की तरह से ईसा अल–मसीह को अपना सब से करिबी ओहदा दे दिया और उन्हें जमीन व आसमान (जो के एक तरह से ऐवाने सदर की तरह हैं) की सब से आला जातुल्ख्शीयत होने का ऐजाज दिया । इस आला व बाला ईजाजत–व–इख्तियार के बाइस हजरत ईसा अल–मसीह ने इन्कीशाफ किया के बनी नौए इन्सान के लिये वही सेराते मुस्तकीम हैं ।

लेहाजा हजरत अल मसीह की फर्माबर्दारी करने से हम यकिनी तौर पर खुदा को जन्नत के हकदार ठहरा सकते हैं ।

लेजाहा आपसे इल्तेमास है के आप अल्लाह तआला की तरफ से दी गई दावतको कबूल करते हुए इमान के साथ हजरत ईसा अल–मसीह के अहकामात की पैरवी करें । इस से आप यकिनी तौर पर जन्नत मे जगह पायेंगे ।

सब से आला मरतबत दोस्त

हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम की विसाल के वक्त की गई दुआः

या अल्लाह मुझे माफ फरमा, मुझ पर रहम कर और मुझे सब से आला मरतबत दोस्त से मिला

(हदीसे सही बोखारी १५७३)

उसके बाद हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम ने अपना हाथ यह कहते हुए बुलन्द किया सब से आला मरतबत दोस्त फिर उन्का हाथ नीचे आया और वह दुनियाँ से चल बसे ।

(हदीसेसही बोखारी १५७४)

वह सबसे आला मरतबत दोस्त कौन था ?

सही बोखारी के मोताबिक यह फरिश्ते और अम्बिया हो सकते थे लेकिन फरिश्तों को कहीं भी सब से आला नहीं कहा गया चुनान्चे हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम का आला मरत्तबत दोस्त कोई फरिश्ता नहीं बल्की एक नबी थे ।

तो नबियों मे से किन को सब से आला मरतबत दोस्त के लकब के काबील सम्झा गया ?

हजरत आदम अलैहिस्सलाम सफीयुल्लाह

हजरत नूह अलैहिस्सलाम नजीयुल्लाह

हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम खलीलुल्लाह

हजरत इस्माईल अलैहिस्सलाम जबीहुल्लाह

हजरत मूसा अलैहिस्सलाम कलीमुल्लाह

हजरत दाउद अलैहिस्सलाम खलीफतुल्लाह

(मज्मुआ सियारफ)

हजरत मोहम्मद स. खुदा अपने बारे में फरमाते हैं: “मैं इस दुनियाँ और आखिरत में ईसा इब्न मरियम के करीब हूँ”। सभी अम्बियाऐं भाइचारे के वजह से एक–दूसरे से ताल्लूक रखते थे। हो सकता है कि माँऐं अलग हो लेकिन मजहब एक था।”

(हदिसे सही बोखारी १५०१)

“(वह वक्त भी याद करने के लायक है) जब फरिश्तों ने (मरियम से कहा) के मरियम खुदा तुझको अपनी तरफ से एक फैज की बशारत देता है जिसका नाम मसीह (और मशहूर) ईसा इब्ने मरियम होगा (और जो) दुनियाँ और आखिरत में बा–आब्रु और (खुदा) के खासों में से होगा”(सुरह आले इम्रान आयत ४५)

“हजरत ईसा ही मुकद्दस ईन्साफ करने वाले होंगे।”

(हादिस सही मुस्लीम १२७)

“ईसा इब्ने मरियम के एलावा और कोइ मेहदी नहीं है।”

(हदीस इब्ने माजा)

“मसीह (यानी) मरियम के बेटे ईसा (ना खुदा थे ना खुदा के बेटे बल्कि) खुदा के रसूल और उस कलमा (बशारत) थे।”(सुरह अन–निसा आयत १७१)

(हदिस अनस बीन मालीक ७२)

Qs.43 Az Zukhruf 63,64

इन आयतों से यही साबित होता है के ईसा इब्ने मरियम के अलावा औ कोई दूसरा आला मरतबत दोस्त नहीं हो सकता। उस आला मरतबत दोस्त को अल्लाह तआला ने यह कहने के लिए भेजा कि: “.और मेरे पीछे चलो यही सीधा रास्ता है”(सुरह अल जुखरफ आयत ६३, ६४)

Qs.8 Al Anfal 21, 22

“और उन लोगों की तरह मत बनो जिन्हों ने ये कहा था के हम सुनते हैं मगर वह सुनते नहीं अल्लाह के नजदीक हैवानात से भी बदतर वह लोग हैं जो बहरे और गूंगे है जो कुछ भी अक्ल नहीं रखते।”(सुरह अल इनफाल आयत २१, २२)

- लेहाजा अल्लाह तआला जो कुछ मजकूर आयात में फरमाता है उस पर बडी एहतयात से गौर करें क्योंकि अल्लाह तआला की तरफ से तुम्हारे लिए दुरुस्त राह के तअैयुन के लिये कुतुबनुमा जैसी हैसियत रखती है।
- तौबा करें क्योंकि हम उस वक्त का इन्तजार क्यों करें के जब अल्लाह तआला हमें शरीरों और अहमकों के साथ शामिल करे जो के उसकी तरफ से बताए गए सीधे रास्ते से दाखिल नहीं होते।
- आइये हम उस सीधे रास्ते से दाखिल हों जो अल्लाह तआला ने हमारे लिये तैयार किया हुआ है और यहाँ पर जिसका बयान भी उसने किया है।

वह अजीम और आली मरतबत दोस्त आज हमारी कैसे मदद करता है ?

१. उस अजीम और–आली मरतबत दोस्तका निशान ये है की उसने बडे वाजेह तौर पर सेरात–ए–मुस्तकीम हम पर जाहिर की हैं।

Qs.2 Al Baqarah 253, 256

ईसा इब्न मरियम को हमने खुले खुले दलाएल दिये थे और रुहुलकुद्दुस के जरिये से उसे ताकत बख्शी थी पस (समझ लो के) जो शख्स (अपनी मर्जी से) नेकी से रोक्ने वाले (की बात मानने) से इन्कार करे और अल्लाह पर इमान रखे तो उसने (एक) नेहायत मजबूत काबिले एतमाद चीज को जो (कभी) टूट्ने की नहीं मजबूती से पकड लिया है। (सूरा अल बकरा आयत २५३, २५६)

हो सकता है के हमने अपने दीन में अल्लाह तआला के तरफ से मोजेजाना राह की पैरवी करने के बजाए इन्सानों की बनाई हुई रेवायात की पैरवी की हो। हो सकता है के जो आप समझते थे हमने उसे सम्झा ही न हो। हम सबको उस वाजेह मोजज्जे की जरुरत है जो अल्लाह तआला ने इस आली मरतबत दोस्त के जरिये मोहैया किया है। आईये हम हर उस राह को रद्द करें और कबूल न करें जिसका जिक्र हमें किताबुल्लाह में नहीं मिलता।

उस के वाजेह निशानात शैतान की तरफ से तवज्जह गिराह करने वाले झूठों पर से पर्दा कुशाई करते हैं। वह निशानात अल्लाह तआला की सच्ची राहों को जाहिर करते हैं। हजरत ईसा कलीमातुल्लाह इन्सानी रिवायात के खोखलेपन और रियाकारी पर से पर्दाह कुशाई करते हैं।

वह लोग जो ईसा के निशान की फर्माबर्दारी करने के दिगर राहों को रद्द करते हैं वह अल्लाह तआला के तरफ से पाक–फज्ल रहनुमाई की पैरवी करते हैं। वह क्यामत और मौत के लिये हमेशा तैयार होते हैं। उनके पास जन्नत में दाखिल होने के लिये बडी मज्बूत यकीन दिहानी है। क्योंकि उनकी पनाह उस अजीम और आली मरतबत दोस्त की कामीलो–खालीस पाकिजगी मे हैं। वह अब जब्र से आजाद है क्योंकि वह इन्सानी रहनुमाई या अपनी महदूद नेकियों पर इन्हिसार नहीं करते हैं।

ऐ मोमिनो ! कलीमतुल्लाह ईसा के उन निशानात से नतो गफलत बरतें और नहीं कोई तफरीक डालें उनकी फर्माबर्दारी करें और यूँ हम वाजेह तौर पर सेरात–ए–मुस्तकीम देखेंगे ताके हम कामिल यकीन के साथ उसमें चलें।

क्या हम ने दिगर राहोंको रद्द किया हें ?

क्या हम उस मोजजाना कलाम की रहनुमाई में हो लिये हैं, जो अल्लाह तबारक तआला ने उस अजीम दोस्त के वसिला से हम से किया है ?

२. वह आला मरतबत दोस्त आज भी हमारे हाथों को थाम कर सिरातल मुस्तकीम पर चल्ने के लिए मदद करना चाहता है।

वह अल्लाह तआला जिसे हम छू नहीं सकते, उसने अपना निहायत ही काबिले एतबार हाथ हम तमाम इन्सानों के लि इस तरह से बढाया के हम हमशीरी कर सकें: हजरत ईसा अल–मसीह जो के अल्लाह के रुह और कलमा थे, मोजजाना तौर पर इन्सान बनकर दुनियाँ मे तशरीफ लाए।

वह नेहायत ही अजीम दोस्त हम तक रसाई करने और मजबूती से हमें सेरात–ए–मुस्तकीम पर कायम रखने में मदद करता है।

Qs.2 Al Baqarah 256

………. जो शख्स नेकी से रोक्ने वाले से इन्कार करे और अल्लाह पर ईमान रखे तो उसने नेहायत मजबूत काबिले–एतमाद चीज को जो टूट्ने की नहीं मजबूती से पकड लिया है। (सूरह अलबकर २५६ आयत)

जब हम आयत २५३ देखते हैं तो फिर ये मारुफ आयतुल्कुर्सी वाजेह हो जाती है। जब हम हजरत ईसा और दिगर अंबिया के वाजेह निशानात पर ईमान लाते हैं तो हम महफूज होते है।

- ऐसा तहफ्फुज हमें अल्लाह तआला के बढे हुए हाथ के नीचे ही मयस्सर हो सकता है । हजरत ईसा रुहुल्लाह होने की वजह से हर तरह की नापाकी से पाक थे । हम महज उसी पाकिजगी में खुदा तआला के साथ जो खुद पाक है और रुह से रुह है राब्ता कर सकते हैं । रुहुल्लाह होने की हैसियत से हजरत ईसा ने अल्लाह तआला की शिफा देने वाली कुदरत के जरिया से तरस खाते हुए बीमारों को शिफा दी ।
- वह निहायत ही एतबार के लायक है क्योंकि के वह हक तआला की तरफ से आया है । वही है जो इस धोकेबाज दुनियाँ में सब से आला सच्चाई है ।
- उसकी तरफ से हमारा तहफ्फुज खोखला नहीं है क्योंकि वह आजमाया गया मगर कामिल रहा और यहाँ तक के बशरी जामे में दुख के आलम में भी वह पूरे इत्मिनान रहा । चुनान्चे उस वक्त उसने फरमाया और जिस दिन में पैदा हुआ था उस दिन भी मुझ पर सलामती नाजील हुई थी और जब मैं मरुँगा और जब मुझे जिन्दा करके उठाया जाएगा (सूरा मरियम ३३ आयत)

Qs.19 Maryam 33

निहायत ही काबिले एतबार हाथ इस तौर पर थाम्ता है के फिर छुटता नहीं

जिन्दगी और मौत के वसीले से अगर हम जिन्दगी और मौत के लिये ठहराए गए खुदा की तरफ से उस निशान को कबूल करते हैं तो वह न खत्म होने वाला इत्मिनान हमें भी मयस्सर हो सकता है ।

Sura Al Imarah 55

सूरा आले इम्रान आयत ५५ में मौतो–हयात का और यौमे–अदालत का मालीक अल्लाह तआला खुद फरमाता है के मैं ने ईसा को जिला कर अपनी तरफ फिर से उठा लिया है । वह लोग जो ईसा की उस अजीम कुर्बानी पर ईमान लाते हैं अल्लाह तआला उन्हें तमाम खताओं से बरी कर देता हैं और उन्हें बहुत बडा अज्र बख्शता है । जब हम खुदा तआला की मर्जी के मुताबीक हजरत ईसा की उस कुर्बानी पर ईमान लाते हैं तो अल्लाह तआला हमें बरी कर देता और अपने साथ आसमानी मकामों पर हमें ले जाता है । इस के लिये हक तआला की हम्दो–तारीफ हो ।

यहाँ तक के हजरत मोहम्मद स. ने भी सिर्फ अपने जेहाद पर ही भरोसा नहीं किया बल्कि इस दुनियाँ से कूच करते वक्त आप भी उस आली मरतबत दोस्त के मुताक थे। ईमान के लेहाज से फिर हमें कितना ज्यादा पुकार उठने की जरुरत है ?

- (अल्लाहुम्मा) ए अल्लाह †
- (अस्तगफिरुल्लाह) मेरे गुनाह माफ कर। मैं दिगर तमाम रास्तों को ठुकराता हूँ। क्योंकि वह मेरी फलाह का जरिया नहीं है और वह तेरी तरफ से मेरी फलाह के लिए किये गए काम ईसा की कुर्बानी पर ईमान लाता हुँ ताकि क्यामत के रोज बख्शीश हासिल कर पाऊँ। मैं सिर्फ तेरी ही राह पर ईमान लाता हुँ
- मुझे उस आली मरतबत दोस्त के वसीले से सम्भाल ले।

क्या हम उस आली मरतबत दोस्त की न टूट्ने वाली कुदरत में महफुज हैं जो के ईसा हैं ?

अल्लाह तआला का निहायत ही कुदरत वाला और काबिले भरोसा हाथ हमें थामें है ?

अल्लाह तआला इस सिरात–ए–मुस्तकीम पर हमें अपनी कुदरत के वसिले से बरकत दे और हमारा तअल्लूक अपने साथ कायम फरमाए।

वस्लामुअलैकुम–व–रहमतुल्लाह व बरकातहु। अल्लाह तआला की सलामती, रहमत और बरकत आप पर हो। आमीन। सुम्मा आमीन।

मजीद मालूमात के लिए हमें आज ही खत लिखें। हमारा पत्ता है :

राह – ए – नजात	**RAH-E-NAJAT**
जी.पी.ओ बाक्स ८९७५	**GPO Box 8975**
ई.पी.सी. १६८४	**EPC 1684**
काठमाण्डौं, नेपाल	**Kathmandu, Nepal**
ई–मेलः	**E-mail:**